FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in |

कक्षा 9 · संस्कृतम् (122) · शारदा (NCERT 2026)

तृतीयः पाठः आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः

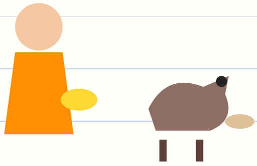

महात्मनः नामदेवस्य कथा · संवादः (नाट्यांशः) · उपपदविभक्तयः · क्तवतु-प्रत्ययः

पाठ-परिचयः

भारतदेशः बहूनां ब्रह्मर्षीणां महात्मनां च भूमिः। तेषां चरित्रेषु **भूतदया, समता, क्षमा, अहिंसा, करुणा, ऋजुता, बन्धुता** इत्यादीनि जीवनमूल्यानि प्राप्यन्ते। महाराष्ट्रस्य प्रसिद्धः महात्मा **नामदेवमहाराजः** स्वीयव्यवहारेण करुणायाः महान्तम् आदर्शम् उपस्थापितवान्। सः सर्वेषु जीवेषु भगवन्तं दृष्टवान्। तस्य जीवनस्य शिक्षाप्रदा घटना **मातामही** कपिलं माधवीं च श्रावयति।

> ★ **परीक्षा-सुझाव:** **कथा-सार:** छुट्टियों में ननिहाल गए कपिल और माधवी एक कुत्ते को पत्थर मारकर भगाते हैं और हँसते हैं। नानी उन्हें संत नामदेव की कथा सुनाती हैं। नामदेव भगवान पाण्डुरङ्ग (विठोबा) के प्रिय भक्त और मित्र थे; उनके गुरु **विसोबा** ने सिखाया था कि ईश्वर सब प्राणियों में रहता है। एक दिन नामदेव ने नैवेद्य की थाली विग्रह के सामने रखकर आँखें मूँदकर प्रार्थना की; आँखें खोलीं तो रोटी गायब थी: एक भूखा कुत्ता रोटी मुँह में दबाकर भाग रहा था। नामदेव क्रोध से नहीं, **करुणा** से, लाठी-पत्थर नहीं, **घी का पात्र** लेकर दौड़े: 'हे देव! सूखी रोटी मत खाइए, घी भी लीजिए', ताकि कुत्ते के पेट में दर्द न हो। कुत्ता अदृश्य हुआ और पाण्डुरङ्ग प्रकट होकर बोले: 'तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हुए।' बच्चे लज्जित होकर संकल्प लेते हैं कि किसी जीव को पीड़ा नहीं देंगे।
> **सीख:** **'आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः'**: जो सब प्राणियों को अपने समान देखता है, वही ज्ञानी है।

परीक्षा में इस पाठ से (CBSE 2026-27 प्रारूप)

प्रश्न	इस पाठ से क्या	अंक
Q16 नाट्यांश	मातामही-कपिल-माधवी संवाद: एकपद, पूर्णवाक्य, भाषिक कार्य	5
Q18 अन्वय	नैवेद्यं गृह्यतां देव... (पुस्तक में अन्वय दिया है)	4
Q19 कथापूर्ति	नामदेव-कथा, मञ्जूषा से	3
Q6 उपपद-विभक्ति	प्रति, विना, धिक्, निकषा, परितः, सह, अलम्	3
Q9 प्रत्यय	क्तवतु (गतवान्, दृष्टवती), ल्यप्, क्त्वा	1–3

पात्र-परिचय

पात्र	परिचय
मातामही	नानी; कथा सुनाती है, बच्चों को करुणा सिखाती है
कपिलः, माधवी	भाई-बहन; पहले कुत्ते को सताते हैं, अन्त में पश्चात्ताप
नामदेवः	महाराष्ट्र के संत, पाण्डुरङ्ग के प्रिय भक्त और मित्र
विसोबा	नामदेव के गुरु
पाण्डुरङ्गः	विठ्ठल/विठोबा, पण्ढरपुर के देव

SAMPLE - notesbazar.in

3.1 मूलपाठः, हिंदी अनुवादः ★★★

अंश 1 कपिलः माधवी च अवकाशकाले मातुलगृहं गतवन्तौ। तत्र क्रीडावेलायां कञ्चन शुनकं दृष्टवन्तौ। तं दृष्ट्वा पाषाणखण्डं हस्ते स्वीकृत्य तं मारयितुं धावितवन्तौ। शुनकः भयेन आक्रोशं कुर्वन् वेगेन धावितवान्। तत् दृष्ट्वा कपिलः माधवी च उच्चैः हसितवन्तौ। मातामही तं प्रसङ्गं दूरात् दृष्टवती, तौ आहूतवती च।

> **अनुवादः** कपिल और माधवी छुट्टियों में मामा के घर गए। वहाँ खेल के समय उन्होंने किसी कुत्ते को देखा। उसे देखकर हाथ में पत्थर का टुकड़ा लेकर उसे मारने दौड़े। कुत्ता डर से चिल्लाता हुआ तेज़ी से भागा। यह देखकर कपिल और माधवी ज़ोर से हँसे। नानी ने वह घटना दूर से देखी और उन दोनों को बुलाया।

अंश 2 मातामही – भोः कपिल! माधवि! किं कुरुतः?

कपिलः – मातामहि! पश्यतु किल। सः शुनकः आवयोः क्रीडायां मध्ये मध्ये प्रविश्य आवां पीडयति स्म। अतः आवां तं सम्यक् दण्डितवन्तौ। (पुनः उच्चैः हसितवन्तौ)

मातामही – वत्सौ, अधुना क्रीडया अलम्। कथां श्रोतुम् इच्छतः वा?

उभावपि – मातामह्याः कथा! रोचते मे कथा... रोचते मे मातामही। (मातामहीम् आलिङ्गितवन्तौ)

> **अनुवादः नानी:** अरे कपिल! माधवी! क्या कर रहे हो? **कपिल:** नानी! देखिए न। वह कुत्ता हमारे खेल में बीच-बीच में घुसकर हमें परेशान कर रहा था। इसलिए हमने उसे ठीक से दण्ड दिया। (फिर ज़ोर से हँसे) **नानी:** बच्चो, अब खेल बस करो। कहानी सुनना चाहते हो क्या? **दोनों:** नानी की कहानी! मुझे कहानी अच्छी लगती है... मुझे नानी अच्छी लगती हैं। (नानी को गले लगाया)

अंश 3 मातामही – उपविशताम्, सावधानेन शृणुतां च। अस्माकं भारतभूमिः अनेकेषां नररत्नानां ब्रह्मर्षीणां राजर्षीणां च प्रसवित्री। बहवः सत्पुरुषाः स्वीयकर्तृत्वेन जन्म सार्थकं कृतवन्तः। किं भवन्तौ महात्मानं नामदेवं जानीतः?

माधवी – आम्। अहं श्रुतवती यत् तस्य कीर्तने स्वयं देवः पाण्डुरङ्गः नृत्यं कृतवान् इति। अपि सत्यम्?

मातामही – आम्। तस्यैव पुण्यश्लोकस्य पाण्डुरङ्गमित्रस्य नामदेवमहाराजस्य एषा कथा। नामदेवः न केवलं पाण्डुरङ्गस्य प्रियभक्तः अपि तु प्रियमित्रमपि। देवः नामदेवं परितः भवति स्म।

> **अनुवादः नानी:** बैठो और ध्यान से सुनो। हमारी भारतभूमि अनेक नर-रत्नों, ब्रह्मर्षियों और राजर्षियों को जन्म देने वाली है। बहुत से सत्पुरुषों ने अपने कर्मों से जन्म सार्थक किया। क्या तुम दोनों महात्मा नामदेव को जानते हो? **माधवी:** हाँ। मैंने सुना है कि उनके कीर्तन में स्वयं देव पाण्डुरङ्ग ने नृत्य किया था। क्या यह सच है? **नानी:** हाँ। उन्हीं पवित्र चरित्र वाले, पाण्डुरङ्ग के मित्र नामदेव महाराज की यह कथा है। नामदेव न केवल पाण्डुरङ्ग के प्रिय भक्त, बल्कि प्रिय मित्र भी थे। भगवान नामदेव के चारों ओर रहते थे।

अंश 4 माधवी – किं सत्यमेव नामदेवस्य मित्रम् आसीत् पाण्डुरङ्गः?

कपिलः – किं देवेन सह अपि मित्रता सम्भवति?

मातामही – आम् वत्सौ। देवः पाण्डुरङ्गः नामदेवस्य प्रियसुहृदासीत्। नामदेवः प्रतिदिनं पाण्डुरङ्गाय नैवेद्यं समर्प्य, तं भोजयित्वा ततः परमेव अन्नं सेवते स्म। तस्य गुरुः आसीत् विसोबा। विसोबा तम् अध्यापितवान् यत् 'ईश्वरः न केवलं मन्दिरे भवति, अपि तु सर्वेषु भूतेषु तस्य निवासो भवति। अतः तस्य सर्वात्मकस्य ईश्वरस्य पूजनं कुरु' इति।

> **अनुवादः माधवी:** क्या सचमुच पाण्डुरङ्ग नामदेव के मित्र थे? **कपिल:** क्या भगवान के साथ भी मित्रता सम्भव है? **नानी:** हाँ बच्चो। देव पाण्डुरङ्ग नामदेव के प्रिय मित्र थे। नामदेव प्रतिदिन पाण्डुरङ्ग को नैवेद्य (भोग) अर्पित करके, उन्हें भोजन कराकर उसके बाद ही अन्न ग्रहण करते थे। उनके गुरु विसोबा थे। विसोबा ने उन्हें सिखाया था कि 'ईश्वर केवल मन्दिर में नहीं होता, बल्कि सभी प्राणियों में उसका निवास होता है। इसलिए उस सर्वात्मा ईश्वर की पूजा करो।'

अंश 5 कपिलः – मातामहि! किं सत्यमेव ईश्वरः सर्वेषु भूतेषु निवसति?

मातामही – आम्, शृणु वत्स! नामदेवः प्रतिदिनम् अतीवश्रद्धया निष्ठया भक्त्या च नैवेद्यस्थालिकाम् आदाय मन्दिरं गच्छति स्म। एकदा सः नैवेद्यस्थालिकां गृहीत्वा विग्रहस्य पुरतः स्थापितवान्। नेत्रे निमील्य प्रार्थनां कृतवान् –

नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

> **अनुवादः कपिल:** नानी! क्या सचमुच ईश्वर सभी प्राणियों में रहता है? **नानी:** हाँ, सुनो बेटा! नामदेव प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धा, निष्ठा और भक्ति से नैवेद्य की थाली लेकर मन्दिर जाते थे। एक बार उन्होंने नैवेद्य की थाली लेकर

(भगवान की) मूर्ति के सामने रखी। आँखें बन्द करके प्रार्थना की:
अन्वयः (पुस्तक): हे देव! नैवेद्यं गृह्यताम्। शर्कराखण्डखाद्यानि दधिक्षीरघृतानि च आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्। भक्तिं हि अचलां मे कुरु। ईप्सितं वरं मे देहि। परत्र च परां गतिं (देहि)।
अर्थ: हे देव! यह नैवेद्य ग्रहण कीजिए। शक्कर के टुकड़े, खाद्य पदार्थ, दही, दूध, घी और भक्ष्य-भोज्य आहार रूपी यह नैवेद्य स्वीकार कीजिए। मेरी भक्ति को अचल (स्थिर) कीजिए। मुझे मनचाहा वर दीजिए और परलोक में उत्तम गति (मोक्ष) दीजिए।

3.2 मूलपाठः, हिंदी अनुवादः (उत्तरार्धम्) ★★★

अंश 6 मन्त्रम् उच्चार्य श्रद्धया प्रणम्य सः नेत्रे उद्घाटितवान्। अहो आश्चर्यम्! पुरतः स्थितायां स्थालिकायां रोटिका नासीत्।
माधवी – पाण्डुरङ्गः आगत्य भक्षितवान् किल?
मातामही – न हि। कश्चन बुभुक्षितः शुनकः आगत्य रोटिकां मुखे गृहीत्वा धावितवान्।
कपिलः – धिक् शुनकम्! मातामहि! पश्यतु, शुनकाः दुष्टाः एव भवन्ति।
माधवी – सत्यं भ्रातः! नामदेवस्य कियत् दुःखं जातं स्यात् खलु।

> **अनुवाद:** मन्त्र बोलकर श्रद्धा से प्रणाम करके उन्होंने आँखें खोलीं। अरे आश्चर्य! सामने रखी थाली में रोटी नहीं थी। **माधवी:** पाण्डुरङ्ग ने आकर खा ली क्या? **नानी:** नहीं। कोई भूखा कुत्ता आकर रोटी मुँह में पकड़कर भाग गया। **कपिल:** धिक्कार है कुत्ते को! नानी! देखिए, कुत्ते दुष्ट ही होते हैं। **माधवी:** सच भैया! नामदेव को कितना दुःख हुआ होगा।

अंश 7 मातामही – पुत्रकौ, शृणुताम्। नामदेवः शुनकस्य पृष्ठे अनुधावितवान्। जानीतः किमर्थं कथं च?
कपिलः – क्रोधेन लगुडम् आदाय शुनकं ताडयितुं धावितवान् स्यात्!
माधवी – दण्डयितुं पाषाणखण्डम् आदाय धावितवान् स्यात्! सत्यं किल मातामहि!
मातामही – न हि बालौ! नामदेवः कोपेन न धावितवान्, प्रत्युत सः करुणया धावितवान्। न लगुडं, न पाषाणखण्डम्, अपि तु घृतपात्रं धृत्वा।
उभावपि – (साश्चर्यम् उच्चैः) किं घृतपात्रम् आधृत्य?
मातामही – आम्, घृतपात्रम् आधृत्य एव।

> **अनुवाद: नानी:** बच्चो, सुनो। नामदेव कुत्ते के पीछे दौड़े। जानते हो किसलिए और कैसे? **कपिल:** गुस्से से लाठी लेकर कुत्ते को मारने दौड़े होंगे! **माधवी:** दण्ड देने के लिए पत्थर का टुकड़ा लेकर दौड़े होंगे! सच है न नानी! **नानी:** नहीं बच्चो! नामदेव क्रोध से नहीं दौड़े, बल्कि वे करुणा से दौड़े। न लाठी, न पत्थर, बल्कि घी का पात्र लेकर। **दोनों:** (आश्चर्य से ज़ोर से) क्या घी का पात्र लेकर? **नानी:** हाँ, घी का पात्र लेकर ही।

अंश 8 उभौ – किन्तु किमर्थम्?
मातामही – जातौ, शुनकः शुष्करोटिकाम् अपहृत्य पलायितवान् खलु। महात्मनः नामदेवस्य चिन्ता आसीत् यत् यदि शुनकः शुष्करोटिकां खादेत् तर्हि तस्य उदरवेदना भवेत् इति। अतः तस्य पीडा मा भवतु इति चिन्तयन् घृतपात्रम् आदाय 'हे देव! शुष्कां रोटिकां मा खादतु, घृतम् अपि स्वीकरोतु' इति वदन् अनुधावितवान् सः।
(उभौ परस्परं पश्यतः। अपराधभावनया तयोः मुखे म्लाने आस्ताम्।)

> **अनुवाद: दोनों:** किन्तु किसलिए? **नानी:** बच्चो, कुत्ता सूखी रोटी चुराकर भागा था न। महात्मा नामदेव की चिन्ता थी कि यदि कुत्ता सूखी रोटी खाएगा तो उसके पेट में दर्द होगा। इसलिए 'उसे पीड़ा न हो' यह सोचते हुए घी का पात्र लेकर 'हे देव! सूखी रोटी मत खाइए, घी भी स्वीकार कीजिए' ऐसा कहते हुए वे पीछे दौड़े। (दोनों एक-दूसरे को देखते हैं। अपराध-भावना से उनके मुख मुरझा गए।)

अंश 9 मातामही – धावन् शुनकः अदृश्यः जातः। तस्य स्थाने पाण्डुरङ्गः आविर्भूतः। स नामदेवम् उक्तवान् – 'वत्स नामदेव! उत्तीर्णः भवान् परीक्षाम्। 'ईश्वरः सर्वेषु भूतेषु निवसति' इति गुरूपदेशं न केवलं भवान् श्रुतवान् अपि तु अनुपालितवान्। सुतरां धन्यो भवान्।'
कपिलः – मातामहि! अहं प्रमादं कृतवान्। अकारणं हि शुनकं ताडितवान्। इतः पूर्वमपि बहुवारं जीवान् पीडितवान्। अद्य अहं ज्ञातवान् यत् सर्वेषु जीवेषु ईश्वरः निवसति, अतः कमपि न पीडयिष्यामि इति।
माधवी – मातामहि! क्षाम्यतु माम्। अहमपि कदापि कस्यापि पीडां न जनयिष्यामि।

> **अनुवाद: नानी:** दौड़ता हुआ कुत्ता अदृश्य हो गया। उसके स्थान पर पाण्डुरङ्ग प्रकट हुए। उन्होंने नामदेव से कहा, 'बेटा नामदेव! तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। 'ईश्वर सब प्राणियों में रहता है' इस गुरु-उपदेश को तुमने न केवल सुना, बल्कि उसका पालन भी किया। तुम सचमुच धन्य हो।' **कपिल:** नानी! मैंने भूल की। बिना कारण ही कुत्ते को मारा। इससे पहले भी अनेक बार जीवों को सताया। आज मैंने जाना कि सब जीवों में ईश्वर रहता है, इसलिए किसी को भी पीड़ा नहीं दूँगा। **माधवी:** नानी! मुझे क्षमा कीजिए। मैं भी कभी किसी को पीड़ा नहीं दूँगी।

अंश 10 मातामही – चिरञ्जीविनौ! मां निकषा आगच्छताम्। (आलिङ्गनं कृत्वा) अस्माकं कायेन वाचा मनसा वा कस्यापि पीडा न भवेत्। तथैव कस्यापि या कापि पीडा स्यात् तां निवारयितुं प्रयतामहे इति सङ्कल्पं कुर्मः। इदमस्तु अस्माकं ध्येयम् – 'आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।'

> **अनुवाद: नानी:** चिरंजीवी रहो! मेरे पास आओ। (गले लगाकर) हमारे शरीर, वाणी या मन से किसी को भी पीड़ा न हो। वैसे ही किसी की भी जो कोई पीड़ा हो, उसे दूर करने का प्रयत्न करेंगे, ऐसा संकल्प करते हैं। यही हमारा लक्ष्य हो: 'जो सब प्राणियों को अपने समान देखता है, वही पण्डित (ज्ञानी) है।'

शब्दार्थाः ★★

शब्दः	संस्कृतार्थः	हिंदी
अनुधावितवान् (अनु + √धाव् + क्तवतु)	पृष्ठतः अधावत्	पीछे दौड़ा
अनुपालितवान्	अनुसरणम् अकरोत्	पालन किया
अपहृत्य (अप + √हृ + ल्यप्)	चोरयित्वा	चुराकर
आविर्भूतः (आविस् + √भू)	प्रत्यक्षीभूतः	प्रकट हुआ
आलिङ्गनं कृतवन्तौ	आश्लिष्टौ	दोनों गले मिले
ऋजुता	सरलता	सीधापन
करुणया	दयया	दया से
कायः	देहः	शरीर
घृतम्	हविः	घी
दण्डितवन्तौ	दण्डं दत्तवन्तौ	दण्ड दिया
नैवेद्यम्	देवाय समर्पयितुं निर्मितः पदार्थः	भोग
निकषा	समीपे	पास
निमील्य (नि + √मील् + ल्यप्)	पिधाय	बन्द करके
पाषाणखण्डम्	शिलाखण्डम्	पत्थर का टुकड़ा
पुण्यश्लोकः	पुण्यः श्लोकः यस्य सः	पवित्र चरित्र वाला
प्रसवित्री	जनयित्री	जन्म देने वाली
ब्रह्मर्षीणाम्	ब्रह्मज्ञानिनाम् ऋषीणाम्	ब्रह्मर्षियों का
बुभुक्षितः	क्षुधार्तः	भूखा
भक्षितवान्	खादितवान्	खाया
मातुलः	मातुः भ्राता	मामा
म्लाने	कान्तिहीने	मुरझाए हुए

लगुडम्	दण्डम्	लाठी
शिक्षाप्रदा (उपपद तत्पुरुषः)	शिक्षां प्रददाति इति	सीख देने वाली
सुहृत्	सखा	मित्र
विग्रहः	देवमूर्तिः	मूर्ति

★ **परीक्षा-सुझावः पाण्डुरङ्गः:** अन्य नाम विठ्ठल, विठोबा, पण्ढरीनाथ, विठुमाऊली। महाराष्ट्र के सोलापुर जनपद में चन्द्रभागा नदी के तट पर **पण्ढरपुर** तीर्थ; **वारकरी सम्प्रदाय** के आराध्य; ईंट पर समचरण खड़े, दोनों हाथ कमर पर ('भक्तों की रक्षा के लिए सदा कटिबद्ध हूँ')।

उपपदविभक्तयः (पुस्तकः अत्र इदम् अवधेयम्) ★★★

उपपदम्	विभक्तिः	उदाहरणम् (पाठात्/पुस्तकात्)
प्रति (ओर)	द्वितीया	नामदेवः मन्दिरं प्रति गच्छति स्म।
विना	द्वितीया / तृतीया / पञ्चमी	कारणं / कारणेन / कारणात् विना शुनकं ताडितवान्।
धिक् (निन्दा)	द्वितीया	धिक् शुनकम्। धिक् दुर्जनम्।
निकषा (समीप)	द्वितीया	कपिलः मातामहीं निकषा आगतवान्।
परितः (चारों ओर)	द्वितीया	देवं परितः भक्ताः सन्ति।
सह, साकम्, सार्धम्, समम्	तृतीया	माधवी कपिलेन सह भ्रमति। रामः लक्ष्मणेन समं वनं गच्छति।
अलम् (बस/मत)	तृतीया	अलं क्रीडया। अलं कलहेन। अलं क्रोधेन।

क्तवतु-प्रत्ययः (भूतकाल, कर्तृवाच्य) ★★★

धातु + क्तवतु (तवत्) → पुंलिङ्ग 'भगवत्' जैसे, स्त्रीलिङ्ग '-वती' (नदी जैसे), नपुंसक 'जगत्' जैसे।

वि.	पुंलिङ्ग (गतवत्)	स्त्रीलिङ्ग (गतवती)	नपुंसक
प्र.	गतवान् गतवन्तौ गतवन्तः	गतवती गतवत्यौ गतवत्यः	गतवत् गतवती गतवन्ति
द्वि.	गतवन्तम् गतवन्तौ गतवतः	गतवतीम् गतवत्यौ गतवतीः	गतवत् गतवती गतवन्ति
तृ.	गतवता गतवद्भ्याम् गतवद्भिः	गतवत्या गतवतीभ्याम् गतवतीभिः	पुंवत्
च.	गतवते ... गतवद्भ्यः	गतवत्यै ... गतवतीभ्यः	पुंवत्
ष.	गतवतः गतवतोः गतवताम्	गतवत्याः गतवत्योः गतवतीनाम्	पुंवत्
स.	गतवति गतवतोः गतवत्सु	गतवत्याम् गतवत्योः गतवतीषु	पुंवत्

पाठ से: गतवन्तौ, दृष्टवन्तौ, धावितवान्, हसितवन्तौ, दृष्टवती, आहूतवती, श्रुतवती, कृतवान्, अध्यापितवान्, स्थापितवान्, उद्घाटितवान्, भक्षितवान्, अनुधावितवान्, पलायितवान्, उक्तवान्, ज्ञातवान्।

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. संस्कृतभाषया उत्तरत।

उत्तर: (क) मातामही कस्य कथां श्रावितवती? **मातामही नामदेवमहाराजस्य कथां श्रावितवती।**

(ख) नामदेवस्य गुरुः नामदेवं किम् अध्यापितवान्? **गुरुः विसोबा अध्यापितवान् – 'ईश्वरः न केवलं मन्दिरे भवति, अपि तु सर्वेषु भूतेषु तस्य निवासो भवति। अतः तस्य सर्वात्मकस्य ईश्वरस्य पूजनं कुरु' इति।**

(ग) नामदेवः कया भावनया धावनं कृतवान्? **नामदेवः करुणया (करुणाभावनया) धावनं कृतवान्।**

(घ) बालकयोः मुखे किमर्थं म्लाने सञ्जाते? **अपराधभावनया बालकयोः मुखे म्लाने सञ्जाते, यतः तौ अकारणं शुनकं ताडितवन्तौ।**

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 6 of 10

(ङ) कपिलः माधवी च कं सङ्कल्पं कृतवन्तौ? **'सर्वेषु जीवेषु ईश्वरः निवसति, अतः कमपि न पीडयिष्यावः, कस्यापि पीडां न जनयिष्यावः' इति सङ्कल्पं कृतवन्तौ।**
(च) 'तं दृष्ट्वा... मारयितुं धावितवन्तौ' इति वाक्ये 'तम्' कस्य कृते प्रयुक्तः? **शुनकस्य कृते।**
(छ) कपिलः माधवी च कुत्र गतवन्तौ? **कपिलः माधवी च अवकाशकाले मातुलगृहं गतवन्तौ।**
(ज) '...तौ आहूतवती च' इति वाक्ये 'तौ' कस्यां विभक्तौ? **द्वितीयाविभक्तौ (द्विवचनम्)।**

2. भूतकालेन (क्तवतु) परिवर्त्य लिखत।

उत्तर: (क) नैवेद्यं विग्रहस्य पुरतः **स्थापितवान्**।
(ख) नेत्रे निमील्य प्रार्थनायाः आरम्भं **कृतवान्**।
(ग) गुरुः विसोबा तम् **अध्यापितवान्**।
(घ) अहं **श्रुतवान् / श्रुतवती**।
(ङ) सत्पुरुषाः स्वकर्तृत्वेन जन्म सार्थकं **कृतवन्तः**।
(च) नामदेवः शुनकस्य पृष्ठे **अनुधावितवान्**।

3. कः/का कं/कां प्रति कथयति?

उत्तर:

कथनम्	कः/का	कं/कां प्रति
(क) कथां श्रोतुम् इच्छतः वा?	मातामही	कपिलं माधवीं च
(ख) अहं श्रुतवती यत् ... पाण्डुरङ्गः नृत्यं कृतवान्	माधवी	मातामहीम्
(ग) किं देवेन सह अपि मित्रता सम्भवति?	कपिलः	मातामहीम्
(घ) अतः तस्य सर्वात्मकस्य ईश्वरस्य पूजनं कुरु।	विसोबा (गुरुः)	नामदेवम्
(ङ) नैवेद्यं गृह्यतां देव...	नामदेवः	पाण्डुरङ्गम् (देवम्)
(च) धिक् शुनकम्।	कपिलः	मातामहीम्
(छ) नामदेवस्य कियत् दुःखं जातं स्यात् खलु?	माधवी	कपिलम् (भ्रातरम्)
(ज) किं घृतपात्रम् आधृत्य?	कपिलः माधवी च	मातामहीम्
(झ) अद्य अहं ज्ञातवान् यत् सर्वेषु ईश्वरः निवसति	कपिलः	मातामहीम्
(ञ) उत्तीर्णः भवान् परीक्षाम्।	पाण्डुरङ्गः	नामदेवम्

4. रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणम्।

उत्तर: (क) देवः नामदेवं परितः भवति स्म। → देवः **कं** परितः भवति स्म?
(ख) ईश्वरः सर्वेषु भूतेषु निवसति। → ईश्वरः **केषु** निवसति?
(ग) शुनकः आगत्य मुखे रोटिकां धृत्वा धावितवान्। → शुनकः आगत्य **कुत्र** रोटिकां धृत्वा धावितवान्?
(घ) शुनकस्य स्थाने पाण्डुरङ्गः आविर्भूतवान्। → **कस्य** स्थाने पाण्डुरङ्गः आविर्भूतवान्?
(ङ) आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः। → आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स **कः**?

5. घटनाक्रमानुसारं लिखत।

उत्तर: 1. (च) नामदेवः मन्दिरं गतवान्। 2. (ग) नामदेवः नैवेद्यस्थालिकां विग्रहस्य पुरतः स्थापितवान्। 3. (क) नामदेवः मन्त्रम् उच्चार्य श्रद्धया प्रणम्य नेत्रे उद्घाटितवान्। 4. (घ) शुनकः शुष्करोटिकाम् अपहृत्य पलायितवान्। 5. (ख) नामदेवः घृतपात्रम् आधृत्य अनुधावितवान्। 6. (ङ) शुनकस्य स्थाने पाण्डुरङ्गः आविर्भूतवान्।

6. उचितविभक्तिं योजयित्वा अनुच्छेदं पूरयत (आगच्छन्तु, पायसं कुर्मः)।

उत्तर: **क्षीरेण** सह तण्डुलाः पक्वाः। **शर्करां / शर्करया / शर्करायाः** विना कथं शक्यते। शीघ्रमेव **आपणं** प्रति गत्वा शर्कराम् आनयतु। **आपणं** निकषा वाहनानि तिष्ठन्ति। ... **शर्करां** परितः पिपीलिकाः आगताः। ... **मधुरं / मधुरेण / मधुरात्** विना पायसं रुचिकरं न भवति। अधुना **पायसं** परितः बालक-बालिकावृन्दं तिष्ठति। धिक् **अन्यान् मधुरपदार्थान्** इति एकः वदति, **तत् / तेन / तस्मात्** विना जीवनम् अपूर्णम् इति अपरः। **पायसेन** सह एव भोजनं

सरसम् इति अन्यः।
नियमः सह → तृतीया; विना → 2/3/5; प्रति, निकषा, परितः, धिक् → द्वितीया।

7. क्तवतुप्रत्ययान्तरूपं योजयित्वा लिखत।

उत्तर: कश्चित् ग्रामं निकषा एका नदी आसीत्। नदी सर्वदा स्वच्छजलम् **दत्तवती**। जनाः तस्याः जलं पीत्वा सुखेन **जीवितवन्तः**। एकः कृषकः तेन जलेन सर्वदा कृषिं **कृतवान्**। कालान्तरम् अन्ये कृषकाः अपि ... क्षेत्रसेचनं **कृतवन्तः**। महिलाः पर्वसमये नदीं **पूजितवत्यः**। एकवारं कश्चित् परिवारः नद्यां मालिन्यानि **क्षिप्तवान्**। क्रमशः अन्ये अपि **क्षिप्तवन्तः**। तेन नदी मलिना **भूतवती**, मीनाः **मृतवन्तः**। स्त्रियः रोगैः पीडिताः **भूतवत्यः**। तदा एका शिक्षिता बालिका जलस्य महत्त्वं सर्वान् **उक्तवती**। सा नदीतीरम् आगत्य स्वयं वृक्षं **रोपितवती**। महिलाः अपि ... तस्याः साहाय्यं **कृतवत्यः**। सर्वे ग्रामवासिनः मिलित्वा नदीं **शोधितवन्तः**। पुनः नदी स्वच्छा जाता निर्मलं जलं च **दत्तवती**। ततः आरभ्य ... जनाः नदीं **पूजितवन्तः** वृक्षरोपणं च **कृतवन्तः**।

8. समस्तपदानि पाठात् चित्वा लिखत।

उत्तर: (क) **घृतपात्रम्** (ख) **पाषाणखण्डम्** (ग) **प्रियसुहृत्** (घ) **उदरवेदना** (ङ) **स्वीयव्यवहारः** (च) **जीवनमूल्यानि** (छ) **मातुलगृहम्** (ज) **नररत्नानाम्** (झ) **स्वीयकर्तृत्वेन** (ञ) **अपराधभावनया** (ट) **गुरूपदेशम्** (ठ) **प्रतिदिनम्** (ड) **राजर्षीणाम्**

परीक्षा-उपयोगी प्रश्नाः (CBSE 2026-27 प्रारूप), हल सहित

नाट्यांशः · Q16 · 5 अंक **मातामही** – पुत्रकौ, शृणुताम्। नामदेवः शुनकस्य पृष्ठे अनुधावितवान्। जानीतः किमर्थं कथं च? **कपिलः** – क्रोधेन लगुडम् आदाय शुनकं ताडयितुं धावितवान् स्यात्! **माधवी** – दण्डयितुं पाषाणखण्डम् आदाय धावितवान् स्यात्! **मातामही** – न हि बालौ! नामदेवः कोपेन न धावितवान्, प्रत्युत सः करुणया धावितवान्। न लगुडं, न पाषाणखण्डम्, अपि तु घृतपात्रं धृत्वा।

उत्तर: (i) एकपदेन (2 × ½): (क) नामदेवः कस्य पृष्ठे अनुधावितवान्? **शुनकस्य** (ख) नामदेवः किं धृत्वा धावितवान्? **घृतपात्रम्**
(ii) पूर्णवाक्येन (2 × 1): (क) कपिलस्य अनुसारं नामदेवः कथं धावितवान्? **कपिलस्य अनुसारं नामदेवः क्रोधेन लगुडम् आदाय शुनकं ताडयितुं धावितवान्।** (ख) नामदेवः केन भावेन धावितवान्? **नामदेवः कोपेन न, प्रत्युत करुणया धावितवान्।**
(iii) भाषिककार्यम् (2 × 1): (क) 'करुणया' इत्यस्य विलोमपदम्? **कोपेन / क्रोधेन** (ख) 'दण्डम्' इत्यर्थे पदम्? **लगुडम्** (ग) 'शृणुताम्' इति क्रियायाः कर्ता? **पुत्रकौ**

नाट्यांशः · Q16 · 5 अंक **मातामही** – धावन् शुनकः अदृश्यः जातः। तस्य स्थाने पाण्डुरङ्गः आविर्भूतः। स नामदेवम् उक्तवान् – 'वत्स नामदेव! उत्तीर्णः भवान् परीक्षाम्। ... सुतरां धन्यो भवान्।' **कपिलः** – मातामहि! अहं प्रमादं कृतवान्। अकारणं हि शुनकं ताडितवान्। ...

उत्तर: (i) (क) कः अदृश्यः जातः? **शुनकः** (ख) कः प्रमादं कृतवान्? **कपिलः**
(ii) (क) पाण्डुरङ्गः नामदेवं किम् उक्तवान्? **पाण्डुरङ्गः उक्तवान् – 'वत्स नामदेव! उत्तीर्णः भवान् परीक्षाम्। सुतरां धन्यो भवान्।'** (ख) कपिलः किं ज्ञातवान्? **कपिलः ज्ञातवान् यत् सर्वेषु जीवेषु ईश्वरः निवसति।**
(iii) (क) 'दृश्यः' इत्यस्य विलोमम्? **अदृश्यः** (ख) 'अनुत्तीर्णः' इत्यस्य विलोमम्? **उत्तीर्णः** (ग) 'भवान्' सर्वनाम कस्मै प्रयुक्तम्? **नामदेवाय**

अन्वयः · Q18 · 4 अंक नैवेद्यं गृह्यतां देव भक्तिं मे ह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परां गतिम्॥
अन्वयः: हे (i) ___! नैवेद्यं (ii) ___। मे भक्तिं हि (iii) ___ कुरु। मे ईप्सितं वरं देहि, (iv) ___ च परां गतिं (देहि)। (मञ्जूषा: परत्र, अचलां, देव, गृह्यताम्)

उत्तर: (i) देव (ii) गृह्यताम् (iii) अचलां (iv) परत्र

कथापूर्तिः · Q19 · 3 अंक नामदेवः (i) ___ भक्तः आसीत्। तस्य गुरुः (ii) ___ आसीत्। एकदा कश्चन (iii) ___ शुनकः रोटिकाम् अपहृत्य धावितवान्। नामदेवः (iv) ___ आदाय तस्य पृष्ठे धावितवान्। सः कोपेन न, (v) ___ धावितवान्। शुनकस्य स्थाने (vi) ___ आविर्भूतः। (मञ्जूषा: करुणया, पाण्डुरङ्गस्य, घृतपात्रम्, विसोबा, पाण्डुरङ्गः, बुभुक्षितः)

उत्तर: (i) पाण्डुरङ्गस्य (ii) विसोबा (iii) बुभुक्षितः (iv) घृतपात्रम् (v) करुणया (vi) पाण्डुरङ्गः

SAMPLE · notesbazar.in

उपपदविभक्तिः · Q6 · 3 × 1

उत्तर: (क) धिक् ___ (दुर्जन)। → **दुर्जनम्** (ख) अलं ___ (कलह)। → **कलहेन** (ग) ग्रामं ___ नदी अस्ति। (परितः/सह) → **परितः** (घ) पुत्रः ___ सह गच्छति। (पितृ) → **पित्रा** (ङ) ___ प्रति गच्छ। (विद्यालय) → **विद्यालयं** (च) जलं ___ जीवनं नास्ति। → **जलं / जलेन / जलात्** विना

प्रत्ययः · Q9

उत्तर: (क) माधवी कथां श्रु + क्तवतु → **श्रुतवती** (ख) बालकौ हस् + क्तवतु → **हसितवन्तौ** (ग) मातामही दृश् + क्तवतु → **दृष्टवती** (घ) आलिङ्गितवन्तौ → आ + लिङ्ग् + **क्तवतु** (ङ) निमील्य → नि + मील् + **ल्यप्** (च) अपहृत्य → अप + हृ + **ल्यप्** (छ) दृष्ट्वा → दृश् + **क्त्वा** (ज) मारयितुम् → मारि + **तुमुन्**

अर्थचयनम् · Q20

उत्तर: (क) बुभुक्षितः शुनकः → **क्षुधार्तः** (ख) मां निकषा आगच्छताम् → **समीपे** (ग) लगुडम् आदाय → **दण्डम्** (घ) कायेन वाचा मनसा → **देहेन** (ङ) प्रियसुहृत् → **सखा**

अभ्यासः: बोर्ड-शैली प्रश्नाः उत्तर सहित

नाट्यांश A: मातामही – आम् वत्सौ। देवः पाण्डुरङ्गः नामदेवस्य प्रियसुहृदासीत्। नामदेवः प्रतिदिनं पाण्डुरङ्गाय नैवेद्यं समर्प्य, तं भोजयित्वा ततः परमेव अन्नं सेवते स्म। तस्य गुरुः आसीत् विसोबा। विसोबा तम् अध्यापितवान् यत् 'ईश्वरः न केवलं मन्दिरे भवति, अपि तु सर्वेषु भूतेषु तस्य निवासो भवति।'

उत्तर: (i) (क) नामदेवस्य प्रियसुहृत् कः? **पाण्डुरङ्गः** (ख) नामदेवस्य गुरुः कः? **विसोबा**
(ii) नामदेवः कदा अन्नं सेवते स्म? **नामदेवः पाण्डुरङ्गाय नैवेद्यं समर्प्य, तं भोजयित्वा ततः परमेव अन्नं सेवते स्म।**
(iii) (क) 'मित्रम्' इत्यर्थे पदम्? **सुहृत्** (ख) 'अध्यापितवान्' क्रियायाः कर्ता? **विसोबा** (ग) 'समर्प्य' प्रत्ययः? **ल्यप्**

नाट्यांश B: मातामही – चिरञ्जीविनौ! मां निकषा आगच्छताम्। अस्माकं कायेन वाचा मनसा वा कस्यापि पीडा न भवेत्। तथैव कस्यापि या कापि पीडा स्यात् तां निवारयितुं प्रयतामहे इति सङ्कल्पं कुर्मः।

उत्तर: (i) (क) मातामही बालकौ कुत्र आगन्तुं कथयति? **स्वनिकषा (मां निकषा)** (ख) कैः पीडा न भवेत्? **कायेन वाचा मनसा**
(ii) मातामही कं सङ्कल्पं कारयति? **अस्माकं कायेन वाचा मनसा वा कस्यापि पीडा न भवेत्, कस्यापि पीडां निवारयितुं प्रयतामहे इति सङ्कल्पं कारयति।**
(iii) (क) 'निकषा' योगे का विभक्तिः? **द्वितीया (माम्)** (ख) 'निवारयितुम्' प्रत्ययः? **तुमुन्**

घटनाक्रमः (8 × ½) (i) मातामही कथां श्रावितवती। (ii) बालौ शुनकं पाषाणैः ताडितवन्तौ। (iii) नामदेवः घृतपात्रम् आदाय धावितवान्। (iv) बालौ मातुलगृहं गतवन्तौ। (v) पाण्डुरङ्गः आविर्भूतः। (vi) शुनकः रोटिकाम् अपहृतवान्। (vii) बालौ सङ्कल्पं कृतवन्तौ। (viii) नामदेवः नैवेद्यं समर्पितवान्।

उत्तर: (iv) → (ii) → (i) → (viii) → (vi) → (iii) → (v) → (vii)

प्रश्ननिर्माणम् (और 6)

उत्तर: (क) बालौ अवकाशकाले मातुलगृहं गतवन्तौ। → बालौ **कदा** मातुलगृहं गतवन्तौ?
(ख) शुनकः भयेन आक्रोशं कुर्वन् धावितवान्। → शुनकः **केन** आक्रोशं कुर्वन् धावितवान्?
(ग) मातामही तं प्रसङ्गं दूरात् दृष्टवती। → मातामही तं प्रसङ्गं **कुतः** दृष्टवती?
(घ) नामदेवः पाण्डुरङ्गाय नैवेद्यं समर्पयति स्म। → नामदेवः **कस्मै** नैवेद्यं समर्पयति स्म?
(ङ) अपराधभावनया तयोः मुखे म्लाने आस्ताम्। → **कया** तयोः मुखे म्लाने आस्ताम्?
(च) विसोबा तम् अध्यापितवान्। → **कः** तम् अध्यापितवान्?

समासाः / सन्धयः (पाठात्)

उत्तर:

पदम्	विग्रहः / विच्छेदः	प्रकारः
मातुलगृहम्	मातुलस्य गृहम्	षष्ठी तत्पुरुषः

महात्मा	महान् आत्मा	कर्मधारयः
नररत्नम्	नरेषु रत्नम् इव	सप्तमी तत्पुरुषः
राजर्षिः	राजा ऋषिः इव	कर्मधारयः
दधिक्षीरघृतानि	दधि च क्षीरं च घृतं च	द्वन्द्वः
प्रतिदिनम्	दिने दिने	अव्ययीभावः
अकारणम्	न कारणम्	नञ् तत्पुरुषः
उभावपि	उभौ + अपि	अयादि (औ → आव्)
गुरूपदेशः	गुरु + उपदेशः	दीर्घः
ह्यचलाम्	हि + अचलाम्	यण्
नासीत्	न + आसीत्	दीर्घः
तस्यैव	तस्य + एव	वृद्धिः
साश्चर्यम्	स + आश्चर्यम्	दीर्घः

लघूत्तरम् (हिंदी): नामदेव घी का पात्र लेकर कुत्ते के पीछे क्यों दौड़े?

उत्तर: नामदेव सब प्राणियों में ईश्वर को देखते थे। उन्हें चिन्ता हुई कि सूखी रोटी खाने से कुत्ते के पेट में दर्द होगा; इसलिए करुणा से घी का पात्र लेकर 'हे देव! सूखी रोटी मत खाइए, घी भी लीजिए' कहते हुए दौड़े। यह 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' का आदर्श है।

बहुविकल्पीयप्रश्नाः: 20 MCQs

1. कपिलः माधवी च कुत्र गतवन्तौ?
   (A) मन्दिरम् (B) विद्यालयम् (C) मातुलगृहम् (D) वनम्
2. बालौ कं ताडितवन्तौ?
   (A) शुनकम् (B) मार्जारम् (C) गाम् (D) काकम्
3. नामदेवः कस्य राज्यस्य महात्मा?
   (A) गुजरातस्य (B) बिहारस्य (C) राजस्थानस्य (D) महाराष्ट्रस्य
4. नामदेवस्य गुरुः कः?
   (A) तुकारामः (B) विसोबा (C) रामदासः (D) ज्ञानेश्वरः
5. नामदेवस्य प्रियसुहृत् कः?
   (A) शिवः (B) पाण्डुरङ्गः (C) गणेशः (D) हनुमान्
6. शुनकः किम् अपहृतवान्?
   (A) घृतम् (B) फलम् (C) दुग्धम् (D) रोटिकाम्
7. नामदेवः किं धृत्वा अनुधावितवान्?
   (A) घृतपात्रम् (B) लगुडम् (C) पाषाणखण्डम् (D) जलपात्रम्
8. नामदेवः केन भावेन धावितवान्?
   (A) कोपेन (B) भयेन (C) करुणया (D) लोभेन
9. 'बुभुक्षितः' इत्यस्य अर्थः:
   (A) क्रुद्धः (B) पिपासितः (C) भीतः (D) क्षुधार्तः
10. 'निकषा' योगे विभक्तिः:
   (A) तृतीया (B) द्वितीया (C) पञ्चमी (D) षष्ठी
11. 'अलं क्रीडया' अत्र विभक्तिः:
   (A) द्वितीया (B) चतुर्थी (C) तृतीया (D) सप्तमी
12. 'धिक् शुनकम्' इति कः वदति?
   (A) कपिलः (B) माधवी (C) मातामही (D) नामदेवः
13. 'विना' योगे का विभक्तिः न भवति?
   (A) द्वितीया (B) चतुर्थी (C) पञ्चमी (D) तृतीया
14. 'दृष्टवती' अत्र प्रत्ययः:
   (A) क्त (B) शतृ (C) क्तवतु (D) क्त्वा
15. 'मातुलः' इत्यस्य अर्थः:
   (A) भाई (B) चाचा (C) नाना (D) मामा
16. पण्ढरपुरं कस्याः नद्याः तीरे?
   (A) चन्द्रभागायाः (B) कृष्णायाः (C) नर्मदायाः (D) गोदावर्याः
17. 'गतवत्' प्रथमा बहुवचनम् (पुं.):
   (A) गतवन्तः (B) गतवन्ति (C) गतवत्यः (D) गतवतः
18. 'सह' योगे विभक्तिः:
   (A) चतुर्थी (B) पञ्चमी (C) द्वितीया (D) तृतीया
19. 'म्लाने' इत्यस्य अर्थः:
   (A) प्रसन्ने (B) कान्तिहीने (C) मलिने (D) रक्ते
20. पाठस्य मुख्यः सन्देशः:
   (A) क्रीडायाः महत्त्वम् (B) धनसञ्चयः (C) सर्वभूतेषु आत्मवत् दर्शनम् (D) देवदर्शनम्

SAMPLE · notesbazar.in

FREE SAMPLE | Buy the complete pack at notesbazar.in | page 10 of 10

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: नामदेव घी का पात्र लेकर कुत्ते के पीछे दौड़े। कारण: उन्हें चिन्ता थी कि सूखी रोटी से कुत्ते के पेट में दर्द होगा।
2. कथन: बच्चों के मुख मुरझा गए। कारण: उन्हें अकारण कुत्ते को मारने का अपराध-बोध हुआ।
3. कथन: नामदेव क्रोध से लाठी लेकर दौड़े। कारण: नामदेव सब प्राणियों में ईश्वर को देखते थे।
4. कथन: 'धिक्' के योग में तृतीया होती है। कारण: 'धिक्' के योग में द्वितीया होती है।
5. कथन: पाण्डुरङ्ग ने नामदेव को 'उत्तीर्ण' कहा। कारण: नामदेव ने गुरु-उपदेश को सुना ही नहीं, उसका पालन भी किया।
6. कथन: पाण्डुरङ्ग वारकरी सम्प्रदाय के आराध्य हैं। कारण: कपिल और माधवी मामा के घर गए थे।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अंतिम-रात सारांश

- शीर्षक-सूक्ति: आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।
- पात्र: मातामही, कपिल, माधवी; कथा में नामदेव (महाराष्ट्र), गुरु विसोबा, पाण्डुरङ्ग (पण्ढरपुर, चन्द्रभागा तट, वारकरी)।
- घटना: नैवेद्य → आँख खोली तो रोटी गायब → बुभुक्षित शुनक → नामदेव घृतपात्र लेकर करुणा से दौड़े → पाण्डुरङ्ग प्रकट: 'उत्तीर्णः भवान् परीक्षाम्' → बच्चों का संकल्प।
- उपपद: प्रति, धिक्, निकषा, परितः → द्वितीया; सह/साकम्/सार्धम्/समम्, अलम् → तृतीया; विना → 2/3/5।
- क्तवतु: गतवान् (पुं.), गतवती (स्त्री.), गतवत् (नपुं.); भूतकाल कर्तृवाच्य।
- शब्द: बुभुक्षितः, लगुडम्, निकषा, सुहृत्, मातुलः, म्लाने, कायः, नैवेद्यम्, विग्रहः, ऋजुता।

SAMPLE · notesbazar.in